



ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(1): 192-193
www.allresearchjournal.com
Received: 24-11-2019
Accepted: 30-12-2019

आरजू खान

शोधार्थी, हिंदी विभाग, अलीगढ़
मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़,
उत्तर प्रदेश, भारत

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श

आरजू खान

सारांश

प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरूष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप में नहीं लिखा जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लिखी है। अतः स्त्री-विमर्श की शुरूआती गुंज पश्चिम में देखने को मिला। सन् 1960 ई. के आस-पास नारी सशक्तिकरण जोर पकड़ी जिसमें चार नाम चर्चित हैं। उषा प्रियम्बदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी एवं शिवानी आदि लेखिकाओं ने नारी मन की अन्तर्द्वन्द्वों एवं आप बीती घटनाओं को उकरेना शुरू किए और आज स्त्री-विमर्श एक ज्वलंत मुद्दा है।

आज मैत्रेयी पुष्पा तक आते-आते महिला लेखिकाओं की बाढ़ सी आ गयी जो पितृसत्ता समाज को झकझोर दिया। नारी मुक्ति की गुंज अब देह मुक्ति के रूप में परिलक्षित होने लगा।

कूटशब्द: हिन्दी साहित्य, स्त्री विमर्श, सशक्तिकरण

प्रस्तावना

ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण हो स्त्री - विमर्श कहलाता है। प्रेमचन्द से लेकर राजेन्द्र यादव तक अनेक पुरूष लेखकों ने नारी समस्या को उकेरा है। लेकिन उस रूप में नहीं जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लेखनी चलायी है। जिसमें चार नाम चर्चित है- उषा प्रियम्बदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी एवं शिवानी। ये नारी मन के छिपे शक्तियों को पहचाना और नारी की दिशाहीनता, दुविधाग्रस्तता, कुण्ठा आदि का विश्लेषण किया।

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी गद्यकार एवं कवि रघुवीर सहायजी नारी जीवन की वास्तविक चित्र खिंचा हैं, उन्होंने अपने काव्य में स्वतंत्रता के बाद स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। जिस भारत में स्त्री वैदिक काल में “यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवता” कहा जाता था आज वही अनेक शोषण का शिकार हो रही है। वह कहता है-

“नारी बेचारी है
पुरूष की मारी
तन से क्षुदित है
लपक कर झपक कर
अंत में चित्त है।

Corresponding Author:

आरजू खान

शोधार्थी, हिंदी विभाग, अलीगढ़
मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़,
उत्तर प्रदेश, भारत

स्त्री लेखिकाओं का योगदान

हिन्दी कथा साहित्य में नारी विमर्श का जोर आठवें दशक तक आते-आते एक आंदोलन का रूप ले लिया। आठवें दशक के महिला लेखिकाओं में उल्लेखनीय है- मंजुला भगत, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पाण्डेय, नासिरा शर्मा, दिप्ती खण्डेलवाल, कुसुम अंचल, इंदू जैन, सुनीता जैन, प्रभाखेतान, सुधा अरोड़ा, क्षमा शर्मा, अर्चना वर्मा, नमिता सिंह, अल्का सरावगी, जया जादवानी, मुक्ता रमणिका गुप्ता आदि ये सभी लेखिकाओं ने नारी मन की गहराईयों, अन्तर्द्वन्द्वों तथा अनेक समस्याओं का अंकन संजीदगी से किया है।

आज स्त्री समाज सभी क्षेत्रों में अपनी भागीदारी निभा रही है। राजनीतिक हो या सामाजिक, आर्थिक हो या सांस्कृतिक उसके बाद भी यह लड़ाई क्यों? लेकिन सवाल तो यह है कि वह पुरूष की भांति स्वतंत्रता चाहती है। इसीलिए पितृसत्ता का विरोध कर पारम्परिक बेड़ियों को तोड़ना चाहती है।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री समाज को हमेशा अंधकारमय जीवन जीने को मजबूर किया है। लेकिन आज की नारी चेतनशील है जिसे अच्छे-बुरे का ज्ञान है। इसीलिए अब इस व्यवस्था का बहिष्कार कर स्वच्छंदात्मक जीवन जीने को आतुर दिखाई पड़ती है। नारी अस्तित्व को लेकर अपने-अपने समय पर कई विद्वानों ने चिन्ता व्यक्त किया है। तुलसीदास जी ने “ढोल गवार, शूद्र, पशु, नारी- सकल ताड़ना के अधिकारी” कहकर नारी को प्रताड़ना के पात्र समझा है तो मैथलीशरण गुप्त जी ने “अबला जीवन हाथ तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में पानी” कहकर नारी के स्थिति पर चिन्ता व्यक्त किया है। प्रसाद ने “नारी तुम केवल श्रद्धा हो” कहा है तो शेक्सपियर ने “दुर्बलता तुम्हारा नाम ही नारी है” आदि कहकर नारी अस्तित्व को संकीर्ण बताया है।

अब स्थिति कुछ बदली हुई नजर आती है। क्योंकि छठे शताब्दी के पहले तक सिर्फ पुरूष लेखकों का अधिकार था, महिला लेखन को काऊच लेखक कहकर हंसी उड़ाया जाता था।

नारी मुक्ति से जुड़े अनेक प्रश्न, उन प्रश्नों से जुड़ी सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक बेबसी और उससे उत्पन्न स्त्री की मनः स्थिति का चित्रण अनेक स्तरों पर हुआ

हिन्दी कथा लेखिकाओं ने अपने-अपने लेखन में नारी मन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। अमृता प्रीतम के रसीदी टिकट, कृष्णा सोबती- मित्रों मरजानी, मन्नू भण्डारी-आपका बंटी, चित्रा मुद्गल -आबां एवं एक जमीन अपनी, ममता कालिया- बेघर, मृदुला गर्ग - कठ गुलाब, मैत्रेयी पुष्पा - चाक एवं अल्मा

कबूतरी, प्रभा खेतान के छिन्नमस्ता, पद्मा सचदेव के अब न बनेगी देहरी, राजीसेठ का तत्सम, मेहरूत्रिसा परवेज का अकेला पलाश, शशि प्रभा शास्त्री की सीढ़ियां, कुसुम अंचल के अपनी-अपनी यात्रा, शैलेश मटियानी की बावन नदियों का संगम, उषा प्रियम्वदा के पचपन खम्बे, लाल दिवार, दीप्ति खण्डेलवाल के प्रतिध्वनियां आदि में नारी संघर्ष को देखा जा सकता है। डॉ. ज्योति किरण के शब्दों में - “इस समाज में जब स्त्रियां अपनी समझ और काबलियत जाहिर करती हैं तब वह कुलच्छनी मानी जाती हैं, जब वह खुद विवेक से काम करती है तब मर्यादाहीन समझी जाती है। अपनी इच्छाओं, अरमानों के लिए जब वह आत्मविश्वास के साथ लड़ती हैं और गैर समझौतावादी बन जाती है, तब परिवार और समाज के लिए वह चुनौती बन जाती है।

निष्कर्ष

महिला लेखिकाओं की लड़ाई डॉ. ज्योति किरण की उपर्युक्त गद्यांश में देखी जा सकती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नारी आदिकाल से ही पीड़ित एवं शोषित रही है पुरूष प्रधान समाज मान मर्यादा के आड़ में सदा उसे दबाकर रखना चाहा। कभी घर का इज्जत कहकर तो कभी देवी कहकर चार दीवारों के अन्दर कैद ही रखा। इन्हीं परम्परागत पितृसत्तात्मक बेड़ियों को लांघने की लड़ाई है स्त्री - विमर्श।

संदर्भ सूची

1. आजकल: मार्च 2013
2. वहीं - पृष्ठ 29
3. पंचशील शोध-समीक्षा
4. आजकल: मार्च 2013
5. आजकल: मार्च 2013